7,8,9 मार्च 2019 तीन दिवसीय विश्व स्तरीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था पोप फ्रांसिस द्वारा 2015 में जारी Laudato Ci घोषणा पत्र के आधार पर इटली के वेटिकन रोम में। विषय था यू एन के 17 ससटेनेबल डेवलप -मेंट गोल और धार्मिक संगठनों की भूमिका

स्वामी अग्निवेश की वैटिकन (रोम) में तक़रीर जो विश्व संसद एवं पृथ्वी संविधान के अध्यक्ष डॉ ग्लेन टी मार्टिन के साथ मिलकर तैयार किया गया।

इंसान का साझा भविष्य

इंसानी सभ्यता और तहज़ीब के सूर्योदय काल में वेदों द्वारा प्रतिपादित किया गया कि अनंत ब्रहांण्ड के कण कण में ईश्वरीय चेतना समाहित है और इस महान् और विराट ईश्वरीय चेतना और अनंत संपदा का इस जगत के समस्त लोगों को मिल-बांटकर त्यागपूर्वक उपभोग करना चाहिए, लालच के वशीभूत होकर नहीं। निकृष्ट भोगवादी संस्कृति की बुनियाद पर सृजित हुई इंसान की लोभी और लालची प्रवृति, का पूर्णतः निषेध किया जाना चाहिए (यजुर्वेद का 40 वां अध्याय)।. वैदिक ज्ञान-विज्ञान द्वारा प्रस्तुत किया गया कि समस्त विश्व एकात्मक है. वैदिक ज्ञान-विज्ञान निरुपित करता है कि विश्व में अनंत एकात्मकता विद्यमान है और अनंत ब्रहांण्ड अपने अंदर ही संपूर्ण तौर पर संपूर्ण समग्रता को समेटे हुए है. वसुधैव कुटुंबकम् का वैदिक मंत्र इंसान को मौहब्बत, सदाक़त, भाईचारा और इंसाफ का पैगाम पेश करता रहा है. समूची दुनिया एक कुटुम्ब , एक ही परिवार है. प्रकृति के सभी तत्व वस्तुतः एक दूसरे पर आश्रित रहे हैं. पोप फ्रांसिस भी इसी तथ्य की बाकायदा पुष्टि करते हैं कि प्रत्येक प्राकृतिक तत्व एक दूसरे के साथ गहन तौर पर अंतरसंबंधों को विलक्षण तौर पर कायम बनाए रखते हैं.

संयुक्त राष्ट्र द्वारा पेश किए गए भरोसेमंद और प्रभावी स्थायित्व लिए पेश किए दस्तावेज में इंसान की तरक्की और प्रगति के लक्ष्य तय किए गए हैं. संयुक्त राष्ट्र द्वारा सुनिश्चित किए गए ये सभी लक्ष्य यकीनन पूर्वाग्रहों से ग्रसित रहे हैं. क्योंकि ये सभी लक्ष्य इंसान के परस्पर प्यार, मौहब्बत और एकता को खंडित और कमजोर करते हैं. पोप फ्रांसिस फरमाते हैं कि प्राकृतिक प्रेम द्वारा हम सभी प्राणी निर्मित हुए हैं और प्राकृतिक प्रेम द्वारा ही संचालित हो रहे हैं. संतुलित और समग्र विकास की सबसे जरुरी शर्त है कि विकास वस्तुतः मानवीय व्यवहार और इंसानियत के प्रति गहन सरोकार से ओतप्रोत होना चाहिए।. समस्त मानवता वस्तुतः एक ही बिरादरी है, किंतु आपसी अंतविरोधों और परस्पर संघर्षो के कारण दुनिया मुखतलिफ टुकड़ों में तकसीम होकर बिखरी गई है. पैट्रिक बार्दलो का हवाला देते हुए, पोप फ्रांसिस यह विचार पेश करते हैं कि संसार को मानव चरित्र में बुनियादी परिवर्तन की प्रबल दरकार है. इस दुरुह कार्य को अंजाम तक पहुचाने के लिए वैश्विक संस्थाओं के चाल, चरित्र और चेहरों में बुनियादी तब्दीलियों की अत्यंत आवश्यकता है, ताकि वे इंसान के नजरिए और उसके व्यवहार को बदल कर रख दें.

वर्तमान वैश्विक व्यवस्था

विश्व की कुल संपदा के आधे से अधिक हिस्से पर केवल एक फीसदी दौलतमंदों का आधिपत्य स्थापित हो चुका है. दुनिया की आधे से अधिक आबादी गुरबत के दलदल में धसीं हुई पड़ी है और नारकीय जिंदगी व्यतीत करने पर विवश है. विश्वबैंक, विश्व व्यापार संगठन और अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष द्वारा कथित तौर पर विश्व पटल पर आर्थिक विकास का आकलन मानव विकास से पृथक करके आंका जा रहा है. दुनिया भर के अर्थशास्त्री अपने विद्यार्थियों को सबक पढ़ा रहे हैं कि वैश्विक पूंजीवाद वस्तुतः इंसान के कल्याण की खातिर कार्यरत है. हकीक़त में तो विश्वबैंक, विश्व व्यापार संगठन और अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष पहले ही दौलतमंद पूंजीशाहों को और अधिक धनवान और ताकतवर बनाने में जुटा हुआ है. संयुक्त राष्ट्र महासभा में दुनिया भर के 193 संप्रभु और खुदमुख्त्यार सदस्य राष्ट्र विद्यमान है, किंतु कड़वी और तल्ख सच्चाई तो यह है कि विश्व के अंतरराष्ट्रीय रंगमंच संयुक्त राष्ट्र महासभा पर वीटो पावर वाले केवल पाँच महाशक्तियों का प्रबल नियंत्रण बना हुआ है.

समस्त संसार में आज के दौर में विनाशकारी युद्ध, बर्बर आतंकवाद, जघन्य अपराधों और मानव संत्रासों का सिलसला कायम बना हुआ है. विश्व पटल पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा मानव कल्याण की खातिर अपनी मुखतिलिफ ऐजेंसियों के माध्यम से विराट तंत्र का निर्माण किया गया है. बहुत विशाल फौज़ी तामझाम से लैस अत्यंत शक्तिशाली राष्ट्रों को बेहद दुर्भाग्यपूर्ण तौर पर संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों द्वारा और अधिक शक्तिशाली बना दिया गया है. संयुक्त राष्ट्र की तकरीबन चालीस ऐजेंसियों द्वारा विश्व पटल पर अर्ध-शासकीय संस्कृति को ताकतवर तौर पर विकसित किया गया है. सन् 1960 से संयुक्त राष्ट्र द्वारा समस्त वैश्विक संपदा और प्राकृतिक खजानों को मानवता की साझा विरासत क़रार दिया गया है लेकिन संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र वस्तुतः सन् 1648 की वैस्टफैलियन फिलासफी पर आधारित है, जिसने कि ब्रह्मण्ड के पृथ्वी ग्रह को राष्ट्र-राज्यों की स्वायत्तशासी ईकाइयों में तक़सीम करके रख दिया है. राष्ट्र-राज्यों की स्वायत्तशासी ईकाइयों का गृहनीति के साथ ही साथ विदेशनीति पर संपूर्ण नियंत्रण स्थापित रहा है. थामस हाब्स से लेकर आज के दौर सभी गहन गंभीर चिंतकों द्वारा अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को युद्धों की व्यवस्था ही करार दिया गया है. विश्व के शक्तिशाली खुदमुख्त्यार संप्रभु राष्ट्र अपनी सैन्य शक्ति के अतिरिक्त किसी अन्य नैतिक और कानूनी ताकत को कदाचित तसलीम नहीं करते हैं. अतः युद्धों की विभिषिका, सैन्य हथियारों की अंधी होड़, दुर्दान्त आतंकवाद, राजनीतिक संग्राम और वैश्विक अस्थिरता अविराम गति सदैव ही आगे बढ़ते रहे हैं.

पोप फ्रांसिस एकदम दुरुस्त ही फरमाते हैं कि युद्धों की विभिषका द्वारा सघन तौर पर पृथ्वी के पर्यावरण को गहन नुकसान उठाना पड़ा है. मानवता के लिए भरोसेमंद, प्रभावी और स्थायित्व से परिपूर्ण भविष्य के निर्माण और सृजन के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा सदैव से ही बहुत अधिक बेबसी और शर्मनाक लाचरगी का प्रदर्शन किया जाता रहा है. संयुक्त राष्ट्र की वास्तविक हैसियत और ताकत इस लायक कदाचित नहीं रही है कि वह शक्तिशाली तौर पर वैश्विक कायदे-कानूनों का निर्माण कर सकता. युद्धों की विभिषिका रोकने में असमर्थ रहे संयुक्त राष्ट्र की

अवहेलना करते हुए शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा स्वछंद तौर पर मनमाना आचरण अंजाम दिया गया है. उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र पर सदैव से ही शक्तिशाली राष्ट्रों का राजनीतिक और आर्थिक तौर पर प्रबल प्रभाव कायम बना रहा है.

भरोसेमंद, स्थाई और प्रभावी प्रगति का दस्तावेज

संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा पेश किया गया भरोसेमंद स्थायी और प्रभावी प्रगति sustainable development goals का दस्तावेज वस्तुतः ऐसे मक़सद को तय करता है जिसको हासिल ही नहीं किया जा सकता है. दस्तावेज का मसविदा कदाचित निरुपित नहीं करता है कि सैन्यीकरण से लैस विश्व व्यवस्था से किस तरह से निपटा जाए. जनसंहारक और विनाशकारी हथियारों को किस तरह से खत्म किया जाएगा. वैश्विक स्तर पर विनाशकारी हथियारों की प्रबल होड़ को किस तरह से रोका जाए. उल्लेखनीय है कि विनाशकारी हथियारों के निर्माण पर तकरीबन दो ट्रीलियन(दो हजार अरब) डॉलर प्रतिवर्ष खर्च किया जा रहा है. विध्वसंक हथियारों की अंधी दौड़ से वैश्विक स्तर पर पर्यावरण का विनाश किया जा रहा है.

संयुक्त राष्ट्र दस्तावेज SDGs के 16वें उद्देश्य के तहत कहा गया कि अवैध विनाशकारी हथियारों के कारोबार को समाप्त किया जाएगा. किंतु कथित वैध हथियारों के विषय में दस्तावेज खामोश है और कुछ भी तो बयान नहीं करता । स्थाई और प्रभावी प्रगति का संयुक्त राष्ट्र दस्तावेज SDGs विश्व पटल पर जनसंख्या विस्फोट के विषय में गहन गंभीरता प्रकट नहीं करता है । स्पष्ट रुप से यह कहा जा सकता है कि केवल समस्याओं को उठाने मात्र से ही, उनका कदाचित निराकरण नहीं किया जा सकेगा. तीव्र गति से दुनिया में बढ़ती हुई आबादी के कारण आर्थिक प्रगति अंजाम देने और रोजगार प्रदत्त करने की कार्य दिशा में ज्यादा कुछ हासिल नहीं किया जा सकेगा. संयुक्त राष्ट्र के स्थाई और प्रभावी प्रगति के दस्तावेज के 8वें उद्देश्य में सकल घरेलू उत्पादन (जीडीपी) को आर्थिक प्रगति का पैमाना तसलीम किया गया है, किंतु एक सीमित क्षेत्रफल वाले संसार में कोई भी असीमित प्रगति कदापि कर नहीं सकेगा. पोप फ्रांसिस इस कटु तथ्य की पुष्टि करते हैं कि असीमित प्रगति करने का दावा पेश करना एक छलावा मात्र है. संयुक्त राष्ट्र दस्तावेज घोषित करता है कि निजी बैंक समूह को अंतरराष्ट्रीय कर्जा प्रदान करते रहना चाहिए. दस्तावेज यह भी दावा करता है कि अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं का महत्व आर्थिक प्रगति के लिए कायम बना हुआ है. सत्य तो यह है कि निजी बैंकों का कार्टेल, वस्तुतः अत्यंत शोषणकारी कर्जा प्रदान कर रहा है. शोषणकारी कर्ज के कारणवश अनेक देश और अनके गरीब नागरिक कर्ज में डूब रहे हैं. ऋण प्रदान करने वाले अमीर देश और अधिक अमीर बनते जा रहे हैं.

संयुक्त राष्ट्र का स्थाई और प्रभावी प्रगति का दस्तावेज एसडीजी विश्व व्यापार संगठन (डब्लूटीओ) को समझौते के तहत कार्य करते रहने का दिशा निर्देश देता है. विश्व व्यापार संगठन WTO एक तानाशाह संगठन है, जिसके ऊपर

शक्तिशाली देशों का प्रभुत्व स्थापित हो चुका है. विश्व व्यापार संगठन के शक्तिशाली देश अपने मनमाने कानून कायदों को दुनिया के अन्य कमजोर देशों पर जबरन थोपते रहते हैं. विश्व व्यापार संगठन के कानून कायदे यकीनन स्पष्ट तौर पर ताकतवर देशों के पक्ष में हैं. दुनिया के शक्तिशाली देश औद्योगिक प्रगति की अंधी दौड़ में ग्रीन हाऊस गैसों द्वारा विनाशकारी प्रदूषण फैला रहे है. संयुक्त राष्ट्र दस्तावेज का 19वां अध्याय बाकायदा बयान करता है कि मानवाधिकारों के कांवेशन्स पर दस्तखत करने वाले देशों द्वारा ही अपने ही नागरिकों का दमन कर रहे हैं.

संयुक्त राष्ट्र का वैस्टफैलियन पैरा डाइम का ढांचा युद्ध की विभिषिका का निराकरण करने में एकदम ही नाकाम साबित हुआ है. विश्व पटल पर संयुक्त राष्ट्र का ऐसा ढ़ाचा मानवाधिकारों की हिफाजत करने में भी नाकाम सिद्ध हुआ है. संयुक्त राष्ट्र सकारात्मक आर्थिक परिवर्तन करने में अक्षम सिद्ध हुआ है. संयुक्त राष्ट्र का ढ़ाचा विश्वपटल पर जनसंख्या विस्फोट पर काबू पाने भी नाकारा साबित हुआ है.

पृथ्वी के लिए वास्तविक प्रभावी स्थायित्व

धरती की खातिर प्रभावी स्थायित्व हमारे एकत्व में ही निहित है.पोप फ्रांसिस द्वारा सम्पूर्ण धरा के लिए समग्र इकॉलाजी का आव्हान किया गया है, जोकि संसार के समस्त प्राणियों के सामूहिक कल्याण पर आधारित रहे. पोप फ्रांसिस फरमाते हैं कि यथाशीघ्र एक क्रियाशील सहमति की समस्त दुनिया को दरक़ार है. पोप फ्रांसिस आगे फरमाते हैं कि एक ऐसी सक्रिय और सकारात्मक सहमति जो दुनिया की हुकूमतों के मध्य कायम हो जाए और जिसका मक़सद समग्र मानवता का कल्याण हो ।. वर्ष 1969 में पोप जॉन तेईसवें ने अपनी कविता में चित्रित किया है कि हमे ऐसी सरकारें चाहिए जोकि विश्वपटल पर प्रभावी तौर पर कार्यरत रह सके. उन्होने सार संक्षेप में आव्हान किया कि एक गहन गंभीर और समग्र नैतिक व्यवस्था के तहत सरकारों की स्थापना होनी चाहिए. वेदों द्वारा भी संपूर्ण संसार को एक संजीदा परिवार के रुप में निरुपित किया गया है. एक संजीदा परिवार के सदस्य वस्तुतः एक दूसरे के साथ न्यायपूर्ण तौर पर मौहब्बत और बंधुत्व के साथ आचरण करते हैं और निस्वार्थ प्रेम के साथ परस्पर व्यवहार अंजाम देते हैं. हमारी वर्तमान वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था प्रभावी स्थायित्व का प्रबल निषेध कर रही है. वस्तुतः इंसानियत के अस्तित्व के लिए हमें समग्र तौर पर नैतिक ऊचांईयों को स्पर्श करना ही होगा । वैश्विक संस्थाओं के कायदे कानूनों को जनतांत्रिक तौर तरीकों पर मौहब्बत, इंसाफ और स्थायित्व के मक़सद को हासिल करना होगा. आज के दौर में इंसान एक अत्यंत त्रासद प्राणी है, जिसके चारों तरफ समुद्र, नदियां, पर्वत, जंगल अर्थात संसार का संपूर्ण पर्यावरण गहरे खतरों से निरंतर ही जूझ रहा है. विकसित अमीर देशों के कॉरपोरेट सैक्टर द्वारा किए जा रहे विध्वंसकारी शोषण से कुदरत के प्रायः सभी संसाधन और स्रोत तबाह और बरबाद हो चले है.

शस्य श्यामला पृथ्वी का प्रस्तावित संघीय संविधान Proposed Constitution of the Federation of Earth भरोसेमंद और प्रभावी विकास की राह को प्रशस्त करता है. शांति, सुख चैन और इंसाफ का ध्येय सुनिश्चित करने वाले पृथ्वी संविधान का प्रथम आर्टिकल युद्धों को पूर्णतः खत्म करने का हुक्म देता है, साथ ही साथ मानावाधिकारों की मुकम्मल हिफ़ाजत करने का प्रावधान पेश करता है. पृथ्वी संविधान का प्रथम आर्टिकल वैश्विक पर्यावरण को संतुलित करने और उसका समुचित संरक्षण करने का निर्देश प्रदान करता है. पृथ्वी संविधान के चौथा आर्टिकल समस्त मानवता के कल्याण के लिए वैश्विक संसद के संचालन का प्रावधान प्रस्तुत करता है, ताकि धरती पर समुंदर, नदियां, जंगल आदि तमाम प्राकृतिक संसाधन और स्रोत सुरक्षित बने रह सकें. पृथ्वी संविधान की संरचना वस्तुतः अनेकता में एकता के नैसर्गिक आधार पर अंजाम दी गई है. वैश्विक परिवार के सभी सदस्य देश शांति, मौहब्बत, भाईचारे और इंसाफ के अत्यंत उच्च नैतिक मूल्यों के साथ ज़िंदा रह सकें. पोप फ्रांसिस की गहरी अंतरदृष्टि है कि शांति, इंसाफ और प्राकृतिक सृजन की सुरक्षा के मध्य गहन तौर पर अंतरसंबंध कायम बना रहा है. संपूर्ण धरती पर समस्त राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं के मध्य एकात्मकता स्थापित की जानी चाहिए. बाजार को केवल मानवता के कल्याण हेतू सक्रिय होना चाहिए. विश्व के प्रत्येक प्राणी की बुनियादी जरुरतों के मुताबिक और आगामी पीढ़ियों के कल्याण खातिर ही वैश्विक अर्थव्यवस्था का संचालन किया जाना चाहिए. धरती से जंग का मुकम्मल खात्मा किया जाना चाहिए. पृथ्वी के समस्त प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल उन्माद भरे सैन्यीकरण के लिए कदाचित नहीं किया जाना चाहिए. मात्र एक फीसदी अमीरों की खातिर वैश्विक अर्थव्यवस्था का संचालन कदापि नहीं किया जाना चाहिए. समग्र मानवता की बुनियादी जरुरतों को पूरा करने के लिए ही वैश्विक अर्थव्यवस्था का संचालन किया जाना चाहिए.

पृथ्वी संविधान- वसुधैव कटुंबकम् के मोहब्बत, भाईचारे और इंसाफ पर आधारित

पृथ्वी संविधान वस्तुतः नैतिक कायदे कानूनों पर आधारित है. पृथ्वी संविधान को संयुक्त राष्ट्र चार्टर का स्थान हासिल कर लेना चाहिए. संयुक्त राष्ट्र की तमाम कार्यकारी ऐजेंसियों को पृथ्वी संविधान के तहत निर्मित की जाने वाली वैश्विक संघात्मक सरकार के साथ एकाकार हो जाना चाहिए. संयुक्त राष्ट्र महासभा को वैश्विक संघात्मक सरकार की वैश्विक संसद में परिवर्तित हो जाना चाहिए.

पृथ्वी संविधान के नैतिक और कानूनी प्रावधानों के आधीन निर्मित वैश्विक सरकार द्वारा नागरिक पुलिस व्यवस्था नागरिक न्याय व्यवस्था का निर्माण किया जाएगा. वैश्विक सरकार एक असैनिक सरकार होगी, जिसके तहत इंटरनेशनल सिविल और क्रिमिनल कोर्ट काम करेगें, वैश्विक सरकार विश्व के समस्त नागरिकों के कल्याण की खातिर कटिबद्ध होगी जोकि एक व्यापक योजना के साथ प्रभावी एवं स्थाई प्रगति के लिए स्वयं को समर्पित कर देगी. पृथ्वी संविधान के तहत निर्मित वैश्विक सरकार मानवता को सबसे विकट संकटों और भयानक समस्याओं का स्थायी समाधान और निदान खोज निकालेगी, जिनका समाधान निकालने में सार्वभौमिक संप्रभु राष्ट्र-राज्य खुद

को पूरी तरह से नाकाम पा रहे हैं. वैश्विक सरकार युद्धों का मुकम्मल खात्मा करेगी और वैश्विक स्तर पर पूर्णरुपेण निशस्त्रीकरण करेगी, मानवाधिकारों की पूरी तरह से हिफाजत करेगी, अमीरों और गरीबों के मध्य उत्पन्न हुई गहन विषमता की खाई को पाटने का काम अंजाम देगी. पृथ्वी संविधान के तहत विश्व के समस्त नागरिकों के कल्याण की खातिर एक वास्तविक तौर पर एक जनतांत्रिक वैश्विक सरकार का निर्माण किया जाना चाहिए तभी कहीं जाकर एक भरोसेमंद, प्रभावी और स्थायित्व से ओतप्रोत वैश्विक प्रगति का दीदार हो सकेगा.

आप सबका धन्यवाद ।